विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

यजुर्विद संहिता के आलोक में व्यक्तिगत जीवन

मैं अपने जीवन के उन पहलुओं की कहानी आपके साथ साझा करना चाहता हूँ, जिसने मेरे जीवन को नई दिशा दी, उसे सार्थक बनाया, और मुझे वह शांति और संतोष प्रदान किया जिसकी खोज में मैं वर्षों तक भटकता रहा। यह यात्रा केवल बाहरी सफलताओं की नहीं थी, बल्कि एक गहरी, आत्मिक और व्यक्तिगत यात्रा थी, जिसने मुझे सिखाया कि जीवन को कैसे सार्थक और संतुलित बनाया जा सकता है। इस यात्रा के दौरान मैंने उद्देश्य, आत्म-विकास, और सकारात्मकसंबंधों के साथ ही सुखायु (आनंद से भरे दीर्घ जीवन) और हितायु (कल्याणकारी दीर्घ जीवन) के महत्व को समझा।

शुरुआती वर्षों में जबरदस्त और लगभग अवर्णनीय संघर्ष रहा। इस संघर्ष ने मुझे आर्थिक, सामाजिक और आजीविका संबंधी मुद्दों में एक नई दृष्टि दी। संघर्ष के पर जाकर वह सब कुछ प्राप्त करने के लिए एक प्रोत्साहन मिला और वह सब कुछ मिला जो जो मेरी दृष्टि में महत्वपूर्ण था। लेकिन एक दिन, जब मैं अपने आप से पूछ बैठा, 'क्या यह सब है?' उस दिन मैंने निर्णय लिया कि मुझे अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य की खोज करनी होगी।

मैंने अपने जीवन को न केवल खुद के लिए, बल्कि समाज के लिए उपयोग करने की दिशा में लगाया। मैंने बच्चों की शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, और सामाजिक सेवा में सक्रियता से सम्मिलित होना प्रारंभ किया। इससे मुझे न केवल जीवन की दिशा मिली, बल्कि हर दिन एक नए उत्साह के साथ काम करने की प्रेरणा भी। जीवन का उद्देश्य न केवल हमारे कार्यों को सही दिशा देता है, बल्कि यह हमें जीवन की गहराई और सच्चे संतोष से जोड़ता है। उद्देश्यपूर्ण जीवन सार्थक जीवन का यह एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। उद्देश्य का पता ना हो तो व्यक्ति निरर्थक घूमता रहता है। इसे अन्य शब्दों में कहें तो सार्थक जीवन एक ऐसा जीवन होता है जिसका उद्देश्य बिल्कुल साफ होता है और उसे उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में व्यक्ति निरंतर लगा रहता है।यह उद्देश्य स्वयं की उन्नति के साथ-साथ समाज और पर्यावरण की उन्नति से जुड़ा होना अनिवार्य है। यदि उद्देश्य केवल स्वार्थ से प्रेरित हों तो जीवन सार्थक नहीं रह पाता। आइए, आगे देखते हैं कि उद्देश्य स्पष्ट होने के बाद आत्म विकास किस तरह महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य मिल जाने के बाद, मैंने अपने आत्म-विकास पर ध्यान देना शुरू किया। मुझे यह अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई कि सीखना और स्वयं को निरंतर बेहतर बनाना जीवन को अद्वितीय बनाता है। पूरे जीवन को पीछे जाकर देखा हूं तो यह साफ होता है कि सदैव कुछ ना कुछ नया सीखने और उसमें महारत हासिल करने से दो उद्देश्यों की पूर्ति एक साथ हो जाती है। पहली बात जीवन में उन्नति के लिए नया ज्ञान और कौशल आवश्यक है, और दूसरी बात, जीवन में हमेशा कुछ नया पाने और करने की संभावना और उस संभावना के अनुरूप प्रयास स्वयं में आनंदित करते हैं। सफलता तो उसका बाइ-प्रोडक्ट है।आत्म-विकास का यह रास्ता न केवल मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रबल बनाता है, बल्कि यह जीवन में एक नए आत्मविश्वास और ऊर्जा का संचार भी करता रहता है।

इस यात्रा में मैंने यह भी सीखा कि आत्म-विकास सिर्फ मानसिक या बौद्धिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और आत्मिक भी होता है। मैंने ध्यान और योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाया, जिसने मुझे अपनी आंतरिक शांति की खोज में मदद की। आत्म-समझ और आत्म-स्वीकृति, आत्म-विकास की सबसे बड़ी कुंजी हैं, और यही मेरी यात्रा का सार है।

ज्ञान और कौशल महत्वपूर्ण हैं लेकिन ये सब अपने आप में सार्थक जीवन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। सार्थक जीवन के लिए विविध प्रकार के सकारात्मक संबंधों को विकसित करना अनिवार्य है।

इस दौरान मैंने यह भी समझा कि जीवन के संबंध कितने महत्वपूर्ण होते हैं। मैंने महसूस किया कि सफलता और विकास के बीच में अपने परिवार और दोस्तों के साथ संबंधों को अनदेखा करके सार्थक जीवन नहीं पाया जा सकता। मैंने जीवन के प्रारंभिक काल में ही यह बात समझ लिया था कि अपने परिवार और मित्रों के साथ उचित और पर्याप्त समय बिताना आवश्यक है। किंतु यहां ध्यान देने वाली वाली बात यह है कि ऐसे संबंध केवल स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं होने चाहिए। रिश्ते मेरे जीवन में संतुलन और प्रसन्नता लाते हैं। जीवन के संघर्षों के बीच, जब हमारे पास सच्चे संबंध होते हैं, तो हर कठिनाई को पार करना आसान हो जाता है। इन संबंधों में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने नियत कर्तव्यों का पालन करते हैं या नहीं। उदाहरण के लिए आप किसी के भाई हैं, किसी के मित्र हैं, किसी के गुरु हैं, किसी के शिष्य हैं, तो क्या आप अपने इन सभी संबंधों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का पालन करते हैं। अगर उत्तर 'हां' में है तो आपका जीवन सार्थक है। और अगर उत्तर 'ना' में है तो आपको अपने जीवन को संवारने के लिए पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। आइए आगे देखते हैं कि इन संबंधों में स्वयं के साथ संबंध, सामाजिक संबंध, और अपने पर्यावरण के साथ संबंध कैसे स्थापित करना आवश्यक है।

जीवन की सार्थकता तब होती है, जब ये सभी घटक एक साथ सामंजस्य में कार्य करते हैं। उद्देश्य जीवन को दिशा देता है, आत्म-विकास से मानसिक और बौद्धिक समृद्धि होती है, सकारात्मक संबंध मन को शुद्ध और शांत रखते हैं, और सुखायु-हितायु का संयोग जीवन को संपूर्णता और संतोष प्रदान करता है।

मेरी इस यात्रा में एक और महत्वपूर्ण पहलू जुड़ा, जिसे मैंने सुखायु और हितायु के रूप में समझा। सुखायु का अर्थ है वह दीर्घ जीवन जो आनंद से भरा हो। मैंने पाया कि केवल दीर्घायु होना महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि जीवन किस प्रकार से जिया जा रहा है, यह उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। मैंने अपने जीवन में सुख का अनुभव किया- चाहे वह मेरे काम के माध्यम से हो, मेरे संबंधों में हो, या फिर मेरे आत्म-विकास की प्रक्रिया में हो। आनंदमय जीवन ही सही अर्थों में सार्थक जीवन होता है। सुखायु में सामर्थ्य और आत्मनिर्भरता सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। इन दोनों के बिना जीवन सार्थक नहीं रह पाता। सुखायु में स्वास्थ्य, आजीविका से संबंधित विभिन्न प्रकार की पूंजी सम्मिलित हैं जो जीवन को सार्थक बनाती हैं। लेकिन केवल स्वयं का सुख जीवन को सार्थकता और पूर्णता नहीं प्रदान कर सकता। सार्थक जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक है कि हमारा जीवन औरों के लिए हितकारी हो। आईए, देखते हैं कि इस हितकारी जीवन, जिसे यहां हितायु कहा गया है, क्या है।

हितायु का अर्थ है वह दीर्घ जीवन जो केवल व्यक्तिगत आनंद के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के कल्याण के लिए भी समर्पित हो। मैंने यह जाना कि जब हम अपने कार्यों से समाज और प्रकृति के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं, तब हमारा जीवन केवल सुखद नहीं, बल्कि हितकारी भी हो जाता है। यह समझना कि हमारा जीवन दूसरों के लिए भी लाभकारी हो सकता है, एक अद्वितीय अनुभव है, जिसको निरंतर जीने से मुझे गहरी संतुष्टि प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर आपयजुर्विद संहिता के निम्नलिखित सूत्रों से बात समझ सकते हैं। जीवनमार्गेऽस्तिचतुर्विधोऽयं, उद्देशधर्मः परमात्मवृद्धिः। संबंधसिद्धिर्हितसंप्रयुक्ता, सुखायुवृत्तिः सततंप्रपन्ना।। तात्पर्य यह है किजीवन के पथ पर चार मुख्य मार्ग हैं-जीवन का उद्देश्य, आत्म-विकास, हितकारी संबंधों की सिद्धि, और सुख से भरा जीवन। उद्देशधर्मेणनिरन्तरंस्यात्, ध्येयं सदा सर्वहितंप्रवृत्तम्। संपत्तिसिद्धिर्हियथार्थभावा, जनस्यसौख्यं च तथैवजातम्।। उद्देश्य की निरंतरता होती है, जो सदा सभी के हित में प्रवृत्त होता है। यह यथार्थ दृष्टि से समृद्धि और समाज के सुख को सुनिश्चित करता है। आत्मोपवृद्धिः परमान्तरात्मा, स्वाध्याययुक्तागुणवृद्धिशीला। ज्ञानं च नित्यंपरितः प्रबुद्धं, धीरंमनोयत्रसुवर्णवर्णम्।। आत्म-विकास आंतरिक आत्मा की प्रगति है, जो स्वाध्याय से युक्त होकर गुणों का विकास करती है। ज्ञान सदा प्रबुद्ध होता है, जहाँ मन की स्थिरता और उज्जवलता प्राप्त होती है। संबंधसिद्धिर्निखिलं सदा स्यात्, शान्तिप्रदंमित्रजनस्यहेतुः। हर्षप्रदंचित्तिवमुक्तिकारी, नित्यं सदा निर्मलमानसेषु।। सकारात्मक संबंध सदा पूर्ण होते हैं, जो शांति और मित्रता को बढ़ाते हैं। ये संबंध मन को आनंद और मुक्ति देते हैं, और सदा निर्मल विचारों के साथ होते हैं। सुखायुवृद्धिर्हितसंप्रयुक्ता, आत्मार्थभावेनसमृद्धिदायः। सर्वेषुभूतेषुकृपान्वितंयः, जीवन्यहीतः स भवत्यनन्तः।। सुखायु की वृद्धि हितकारी कार्यों से युक्त होती है, जो आत्मार्थता के साथ समृद्धि प्रदान करती है। सभी प्राणियों के प्रति करुणा रखने वाला जीवन सदा के लिए हितकारी होता है। संयुक्तमार्गेण यथा प्रवृत्तिः, सिद्ध्येत्सदाशान्तियुतासमर्था। उद्देशपूर्णंहियथार्थयुक्तं, सुखायुतंस्यात्हितसंप्रयुक्तम्।। एकीकृत मार्ग पर सही दिशा में चलने से सदा शांति और सामर्थ्य की सिद्धि होती है। जब उद्देश्य स्पष्ट और यथार्थ हो, तो जीवन सदा सुख और हित से युक्त होता है।

समग्रता में ये सूत्र जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं-उद्देश्य, आत्म-विकास, सकारात्मक संबंध, सुखायु (आनंद से भरे दीर्घ जीवन) और हितायु (कल्याणकारी दीर्घ जीवन)-का संपूर्ण चित्रण करते हैं। जीवन की सार्थकता तब होती है, जब ये सभी घटक एक साथ सामंजस्य में कार्य करते हैं। उद्देश्य जीवन को दिशा देता है, आत्म-विकास से मानसिक और बौद्धिक समृद्धि होती है, सकारात्मक संबंध मन को शुद्ध और शांत रखते हैं, और सुखायु-हितायु का संयोग जीवन को संपूर्णता और संतोष प्रदान करता है।

इसके साथ ही निम्न लिखित बातें महत्वपूर्ण है (यजुर्विद संहिता): विज्ञानमेतद्सममाश्रितोऽस्मि, साक्ष्येस्थितोऽहंधृतिनिर्मलश्च।सत्यं च निष्पक्षतयादधानः, करुणां तथा परहितंवहामि।। तात्पर्य यह है कि मैंने विज्ञान और अध्यात्म को समान रूप से अपनाया है। साक्ष्य में स्थिर रहते हुए, मैं निष्पक्षता, सत्य, धैर्य को धारण करता हूँ, और साथ ही करुणा और परोपकार का वहन करता हूँ। सत्यंधृतिः संयमितंमनश्च, सत्त्वे करुणा परमार्थिता च। एतेममार्थेपरमार्गदर्शाः, जीवस्यमार्गेजटिलेसहायाः।। सत्यनिष्ठा, आत्म-नियंत्रण, करुणा और परोपकार मेरे मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। ये सिद्धांत जीवन के जटिल मार्ग पर चलने में मेरी सहायता करते हैं। दोषैर्युतंनाभिलषे कदाचित्, ज्ञानंततः शुद्धमथाऽवधार्य। विज्ञानयोगेनसमं च तत्त्वं, धार्यंसमासादितवृत्तिमेकम्।। मैं दोषयुक्त ज्ञान की आकांक्षा कभी नहीं करता, बल्कि शुद्ध और सत्य ज्ञान की प्राप्ति की चाह रखता हूँ। विज्ञान और आध्यात्म के योग से मैंने अपनी जीवन धारा को एक दिशा में स्थापित किया है, जिससे जीवन में पूर्णता और संतुलन आता है।

आज, जब मैं अपने जीवन की इस यात्रा पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे गर्व होता है कि मैंने उद्देश्यपूर्ण, आत्म-विकास पर केंद्रित, और सकारात्मक संबंधों से भरा जीवन जिया है। सुखायु और हितायु की ओर मेरी यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि एक सार्थक जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी होता है। यही वह जीवन है, जिसमें न केवल हम स्वयं आनंदित होते हैं, बल्कि हम समाज और प्रकृति के प्रति अपने उत्तरदायित्व भी निभाते हैं। यही मेरी आत्मकथा का सार है-एक जीवन, जो हर दिन सार्थकता और संतुलन से भरा है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में राष्ट्रीयआयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

'अच्छी शिक्षा' कैसी हो?

राजेन्द्र भाणावत

भारत में स्वतंत्रता के बाद जितने प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में हुए, उतने शायद किसी क्षेत्र में नहीं हुए हैं। राजस्थान तो विशेषकर प्रयोगों का गढ़ रहा है। तीन बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी। कभी व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया तो कभी इसे बंद कर दिया गया। कभी बोर्ड की परीक्षा दसवीं क्लास से भी हटा दी गई तो कभी पांचवीं का भी बोर्ड बना दिया गया। आजकल, खुली किताबों के माध्यम से परीक्षा कराने की बात की जा रही है। कभी एन जी ओ द्वारा संचालित संस्थाओं को 90% तक अनुदान सरकार द्वारा दिया जाता था, तो अब इसे बिल्कुल समाप्त कर दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि ये सारे बदलाव बहुत ही सतही सिद्ध हुए। समय के साथ सरकारी और निजी स्कूलों में आधारभूत सुविधाओं और शिक्षा की गुणवत्ता में भी बहुत अंतर आता गया। हालत यह हो गई कि सरकारी स्कूल केवल गरीबों के स्कूल बन कर रह गए। राजस्थान में तो आधे से अधिक बच्चे निजी विद्यालयों में जाने लगे। निजी विद्यालयों की फीस पर सरकार कोई प्रभावी नियंत्रण नहीं कर पाई। अधिकांश तकनीकी उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए बोर्ड में प्राप्त अंक महत्वहीन हो गए। इनमें प्रवेश के लिए अलग से प्रतियोगी परीक्षा होने लगी, जिसके कारण बहुत बड़ी संख्या में कोचिंग संस्थान खुलते चले गए जो विद्यार्थियों के मानसिक एवं आर्थिक शोषण के माध्यम बन गए।

इन सब परिवर्तनों के बाद भी शिक्षा, अच्छे समाज के निर्माण का माध्यम नहीं बन पाई । समाज में जो बदलाव हुए भी, तो वे समाज को पतन की ओर ले जाने वाले सिद्ध हुए। हम इस पर चर्चा करेंगे कि 'अच्छी शिक्षा' किसे कहते हैं ?

अच्छी शिक्षा वह है जो इंजिनियरिंग स्नातक को न केवल तकनीकी ज्ञान और कौशल में निष्णात बनाए बल्कि उनमें यह भावना भी विकसित करे कि उनके लिए जनकल्याण सर्वोपरि है। उनके द्वारा बनाए हुए पुल पहली बारिश में टूट कर लोगों की जान न ले लें। वे भवन ऐसे न बनाएं कि उनकी छत टूटने से मासूम बच्चे दब कर मर जाएं। वे ऐसी सड़के न बनाएं जिसमें दो इंच बारिश से ही अनेक गड्ढे हो जाएं । वे बांध ऐसे नहीं बनाएं जो कुछ ही समय में टूटकर गांवों को जल प्लावन का शिकार बना ददें। वे सरकारी धन का उपयोग यह मान कर करें कि वह उनका स्वयं का पैसा है । और अपनी तनख्वाह में जीना सीखें। वे ठेकेदारों से कमीशन न लें ताकि हर काम गुणवत्ता पूर्ण हो। इंजीनियर ऐसे बनें जो पूरे मनोयोग से अपनी क्षमता के अनुसार ऐसा निर्माण कार्य कराएं जो वर्षों तक खराब न हो। रियासत के जमाने के बने हुए बांध और पुल आज भी वैसे के वैसे खड़े हैं जबकि उनका निर्माण बिना डिग्री धारी इंजीनियरों ने कराया था।

'अच्छी शिक्षा' से ऐसे चिकित्सक निकलें जो मरीज का इलाज करते समय केवल एक ही बात का ध्यान रखें कि मरीज कैसे स्वस्थ हो सकता है? वे यह सोचकर दवाइयां न लिखें कि कौन सी कंपनी उन्हें अधिक कमीशन दे रही है। वे मरीजों की अनावश्यक जांच भी अधिक कमाई के लोभ में न लिखें, ताकि गरीब पर उसका भार न पड़े। चिकित्सक अपनी सेवाओं के लिए शुल्क लें, इसमें किसी को ऐतराज नहीं है, किंतु प्रत्येक लिए गए शुल्क की रसीद मरीज को दें। वह केवल कॉर्पोरेट अस्पतालों का लाभ बढ़ाने हेतु अनैतिक कार्य में सहयोगी न बनें ।चिकित्सकों को समझना होगा कि उनका व्यवसाय पवित्र है और उसकी पवित्रता को बनाए रखना उनका पहला ध्येय होना चाहिए। 'अच्छी शिक्षा' दक्ष चिकित्सक को तैयार करने के साथ ही, उनमें वह मानसिकता भी उत्पन्न करेगी, जिसके चलते वे मरीजों के हित को स्वयं के स्वार्थ के ऊपर रखते हुए कार्य करेंगे। वे अधिकांश लोगों के स्वस्थ रहने की कामना करेंगे न कि उनके बीमार होने की, ताकि वे उनसे पैसा कमा सकें । कोरोना के दौरान कुछ चिकित्सकों द्वारा जिस प्रकार का व्यवहार गरीब जनता के साथ किया गया, उसने इस पवित्र पेशे को बदनाम ही किया। अच्छी शिक्षा यह सुनिश्चित करेगी कि भविष्य में ऐसा कभी नहीं होगा।

'अच्छी शिक्षा' से तात्पर्य यह है कि यदि कोई शिक्षक बने तो वह ऐसा बने कि वह बच्चों के भविष्य के साथ अपना भविष्य जोड़े । वह पढ़ाई केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए न करे अपितु निरंतर अपनी योग्यता, कौशल और दक्षता को परिमार्जित करने में लगा रहे। वह शिक्षक ऐसा बने जिसका समुदाय के साथ पूरा जुड़ाव हो। जो दबाव और प्रलोभन के कारण किसी भी अयोग्य विद्यार्थी को अधिक अंक परीक्षा में न दे। शिक्षक बच्चों को डराने के बजाय उनके लिए आनंददाई शिक्षण प्राप्त करने का माध्यम बने । बदलती तकनीक का उपयोग करते हुए वे अपने मूलभूत मूल्यों को बनाए रखें। जिस प्रकार के मूल्य, बच्चों में शिक्षकों के द्वारा डालने की अपेक्षा है, वैसे ही मूल्यों का प्रदर्शन अपने कार्य और व्यवहार में करते हुए दिखाए दें। कहा भी गया है कि बच्चे वह नहीं करते जो उन्हें कहा जाता है बल्कि वह करते हैं जैसा वे होते हुए देखते हैं। जब शिक्षक अच्छी शिक्षा प्राप्त करके निकलेंगे तो वे ट्यूशन का धंधा नहीं चलाएंगे। जो बच्चों के विकास को जीवन का उद्देश्य मानते हुए कार्य करेंगे। यह बात सभी प्रकार के शिक्षकों पर लागू होगी, चाहे वे सरकारी विद्यालय में कार्य कर रहे हों अथवा निजी विद्यालयों में।

'अच्छी शिक्षा' प्राप्त करके यदि कोई सरकारी अधिकारी बनता है तो वह रिश्वत न ले, न ही पक्षपात पूर्ण कार्यवाही करे। वह दबाव और प्रलोभन में आए बिना निष्पक्षता पूर्वक अपना कार्य पूर्ण निष्ठा से करे। उसके लिए सबसे ऊपर संविधान और गरीब का हित होगा। वह बिना किसी भेदभाव के और लाग लपेट के विभिन्न सरकारी नीतियों का इस प्रकार से क्रियान्वन करे कि उनका अधिकाधिक लाभ अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। वह अहंकारी नहीं हो एवं साधारण जनता से मिलने के लिए सदैव उपलब्ध हो। ऐसे नौकरशाह विनम्र हों और कार्य करने के लिए तत्पर भी हों। वह यह देखकर कार्य नहीं करें कि उसके लिए किसी की सिफारिश है अथवा नहीं। अच्छी शिक्षा प्राप्त करके नौकरशाहों की नीयत यदि अच्छी बनेगी तो वास्तव में सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन गरीबों के हित में करने के निमित्त बनेंगे।

'अच्छी शिक्षा' के माध्यम से जो उद्यमी या उद्योगपति बनेंगे वे पैसा अवश्य कमाएंगे किंतु नीति पूर्वक। वे सरकार को जहां देय कर अदा करेंगे, वहीं अपने श्रमिकों और कर्मचारियों का शोषण नहीं करेंगे। वे उन्हें अपने उद्योग में साझेदार मानते हुए उनकी क्षमताओं का पूरा उपयोग करेंगे और उसके लिए उन्हें पर्याप्त सुविधाएं एवं वेतन उपलब्ध कराएंगे । ऐसे उद्यमी सरकारी अफसर को रिश्वत देने का प्रयास नहीं करेंगे और ईमानदारी से अपना उद्यम करेंगे।

'अच्छी शिक्षा' प्राप्त करने वाले वकील सत्य का साथ देंगे और अपने पक्षकार के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्य करेंगे । वे ऐसे वकील नहीं होंगे जो केवल तारीख पर तारीख लेते रहें और अपने मुवक्किल को गलतफहमी में रखते रहें। वे यह कोशिश नहीं करेंगे कि किसी विशेष न्यायालय के न्यायाधीश के समक्ष मामले को लगवाएं। वे किसी न्यायाधीश को रिश्वत देने की पेशकश कभी नहीं करेंगे। सामने वाले पक्ष के वकील से मिलकर अपने ही पक्षकार का नुकसान नहीं करेंगे। इस बात को याद रखेंगे कि फीस लेते समय वे उनके मुवक्किल की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखेंगे।आवश्यक होने पर वे नाम मात्र की कम फीस में भी जनहित के मामले पुरजोर तरीके से पैरवी करेंगे।

'अच्छी शिक्षा' प्राप्त करके बना पुलिस अधिकारी थाने में आने वाले पीड़ित व्यक्ति को अपनी कमाई का साधन बनाने के बजाय उसे राहत पहुंचाने का कार्य करेगा। वह इस प्रकार से कार्य करेगा कि साधारण व्यक्ति के मन में पुलिस के प्रति विश्वास उत्पन्न हो और जो अपराधी हैं उनमें पुलिस से भय पैदा हो । ऐसे पुलिस अधिकारी सरकार का इकबाल स्थापित करेंगे, ताकि देश के नागरिक शांतिपूर्वक रह सकें। वे सांप्रदायिक तनाव की स्थिति में बिना पक्षपात किए न्यायसंगत तरीके से विवाद को सुलझाने का प्रयास करेंगे।

ऐसी अच्छी शिक्षा के माध्यम से निकले अनेक व्यक्ति राजनीति में भी जाएंगे। ऐसे व्यक्ति जनता से झूठे वादे और छल कपट नहीं करेंगे । सरकारी ठेके और तबादलों में कमीशन नहीं खाएंगे । ये अपनी राजनीतिक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखते हुए जनता के हित को सर्वोपरि रखते हुए कार्य करेंगे । ये लोग चुनाव में निर्धारित सीमा से अधिक खर्च नहीं करेंगे ।

वे समुदायों में वैमनस्य और घृणा फैलाकर चुनाव जीतने के बजाय निस्वार्थ सेवा भाव से उनका काम करके लोकप्रिय होंगे और उसी के आधार पर चुनाव जीत कर सत्ता में आएंगे । पंचायत स्तर से लेकर केंद्रीय स्तर के नेता पूरी तरह समर्पित भाव से देश सेवा में लगेंगे ।

'अच्छी शिक्षा' प्राप्त सामान्य नागरिक भी अपने कर्तव्यों का संविधान के अनुसार पालन करेंगे। वे वैज्ञानिक सोच विकसित करेंगे और अंधविश्वासी नहीं बनेंगे। वे न तो सार्वजनिक स्थान पर गंदगी करेंगे न सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण करेंगे। वे जाति और धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं करेंगे और प्रेम और सद्भाव का वातावरण बनाने में निमित्त बनेंगे। वे ट्रैफिक के नियमों का पूर्णतया पालन करेंगे ।

'अच्छी शिक्षा' सबके लिए सुलभ होनी चाहिए ताकि सरकारी एवं निजी विद्यालय से पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों को यह समान रूप से प्राप्त हो। अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार को संसाधनों की कमी का बहाना छोड़ना होगा। सभी को अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तो फिर देश में असमानता में बहुत कमी आएगी । तब देश वास्तव में विश्व गुरु और विकसित बनने की राह पर तेजी से अग्रसर हो पाएगा। कई लोगों को उपरोक्त प्रकार की अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने की बात कल्पना लोक में विचरण करने जैसी लगे, किंतु यह इच्छा शक्ति और संकल्प से संभव है।

आइए, हम सब मिलकर 'अच्छी शिक्षा' सबको सुलभ कराने के उद्देश्य से 'शिक्षा क्रांति' लाने में जुट जाएं।

-राजेन्द्र भाणावत,
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

किशनगढ़ बास : जिले का सबसे पुराना उपखंड हूं मुझे मेरे दिन वापस लौटा दो

किशनगढ़बास । आज़ादी से पहले भरतपुर के महाराजा जोरावर सिंह ने यहां भरतपुर की तर्ज पर भव्य किले का निर्माण कराया और भगवान श्री कृष्ण की भक्ति में इस स्थान को कृष्णगढ़ नाम दिया। किले के पास ही श्री बांके बिहारी मंदिर का निर्माण भी कराया गया, जो आज भी आस्था का प्रमुख केंद्र है।

समय के साथ कृष्णगढ़ का नाम बदलकर किशनगढ़ बास हो गया। किशनगढ के साथ जुड़े बास का भी अपना एक अलग महत्व है बास खैरथल से भी पुरानी अनाज की मंडी रही है। अब इतिहास का यह संयोग देखिए-राजस्थान के मौजूदा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, जो स्वयं भरतपुर जिले से हैं, उन्होंने हाल ही में खैरथल-तिजारा जिले का नाम भर्तृहरि नगर रखने की घोषणा की है। यह वही खैरथल है, जो किशनगढ बास से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। खैरथल तिजारा जिले का भतृहरि नगर नाम किए जाने पर सियासी खींचतान मची है।

किशनगढ़ बास के लोग भाजपा नेताओं से कह रहे किशनगढ बास का उपखंड सबसे पुराना है और जिले की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है जिला मुख्यालय बनाकर पुराने दिन वापस लौटा दो। किशनगढ़ बास के लोग भतृहरि नगर नाम का स्वागत कर रहे। जैसे उनका कस्बा पहले कृष्णगढ़ नाम से आस्था का केंद्र रहा है, वैसे ही उनके लिए भतृहरि महाराज का नाम भी धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सम्मानजनक है। अलवर की तपोस्थली भतृहरि हरी धाम में उनका गहरा संबंध रहा है। खैरथल के विधायक दीपचंद खेरिया और कांग्रेस इस नामकरण का विरोध कर रहे हैं।

मदार नहर से फतहसागर में आवक, मूसलाधार बारिश के बाद दिनभर उमस

उदयपुर। उदयपुर शहर में कई दिनों की बेरूखी के बाद शुक्रवार को मूसलाधार बारिश हुई। कड़कती बिजली के बीच तेज बारिश ने एक बार फिर झीलों में आवक शुरू कर दी है। हालांकि शनिवार को दिनभर मौसम में भारी उमस बनी रही। इधर, शहर की फतहसागर झील को भरने वाली मदार नहर इस सीजन में पहली बार तेज बहाव के साथ बही। मदार नहर के चलने से फतहसागर झील छलकने की उम्मीदों के पंख लग गए।

लेकसिटी में करीब 15 दिन बाद शुक्रवार दोपहर को मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हुआ। करीब 12 से 15 मिनट बारिश के बाद रात को भी मूसलाधार बारिश हुई। मूसलाधार बारिश से मदार बड़ा तालाब छलक गया और फतहसागर झील को भरने वाली मदार नहर में चिकलवास हेड व टेल के जरिए पानी की आवक होने लगी और यह करीब ढाई फीट के वेग से बहते हुए फतहसागर झील में समां रही है।

उदयपुर शहर की फतहसागर झील का जलस्तर 10 फीट बना हुआ है। कुल भराव क्षमता 13 फीट है ऐसे में इसे छलकने के लिए तीन फीट पानी चाहिए। मदार नहर के तेज बहाव के चलने से अब झील में आवक तेज शुरू हो जाएगी।

इससे पहले इस झील को 11 फीट क्षमता तक लिंक नहर के माध्यम से भरा गया था और इसके बाद आवक रूकने से इसका जलस्तर कम होकर 10 फीट हो गया। सीसारमा नदी का वेग भी बढ कर 2 फीट हो गया है। इधर, शनिवार का दिन भारी उमस भरा रहा। दिनभर बारिश का इंतजार होता रहा। प्रातः 8 बजे समाप्त बीते 24 घंटों में सर्वाधिक बारिश मदार में 40 मिमी, बागोलिया 25, उदयपुर शहर 15 मिमी, नाई 20, वल्लभनगर 18 व देवास स्टेज प्रथम पर 16 मिमी बरसात हुई।

उदयपुर शहर की फतहसागर झील को भरने वाली मदार नहर से पानी की तेज आवक शुरू हो गई है। इस झील को भरने के लिए तीन फीट पानी की आवश्यकता है।

■ लेकसिटी में करीब 15 दिन बाद शुक्रवार दोपहर को मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हुआ। करीब 12 से 15 मिनट बारिश के बाद रात को भी मूसलाधार बारिश हुई। मूसलाधार बारिश से मदार बड़ा तालाब छलक गया और फतहसागर झील को भरने वाली मदार नहर में चिकलवास हेड व टेल के जरिए पानी की आवक होने लगी और यह करीब ढाई फीट के वेग से बहते हुए फतहसागर झील में समां रही है।

राशिफल रविवार 17 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि नवमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 3:18 तक, व्याघात योग रात्रि 1:40 तक, तैतिल करण प्रातः 8:30 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज ज्वालामुखी सायं 7:25 तक है। आज गोगा नवमी, नन्द महोत्सव, संक्रांति पुण्य काल पूर्वान्ह में है। आज रोहिणी व्रत है और मनसा पूजा समाप्त होगी।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:40 से 9:17 तक, लाभ-अमृत 9:17 से 12:31 तक, शुभ 2:08 से 3:45 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:03, सूर्यास्त 5:59

मेष
आवश्यक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मिथुन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद हो सकता है।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कन्या
नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

धनु
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।